दबाव समूह से सम्बन्धित व्यापारिक समूह : एक अध्ययन

डॉ0 मनोज कुमार सिन्हा

भारत में व्यापारिक समूहों के निमार्ण का इतिहास 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ से शुरू होता है। 1833 के बाद जब भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी के व्यापारिक एकाधिकार का अंत हो गया और भारत में व्यापार करने का अवसर ब्रिटेन के व्यापारिक हितों को खुले रूप में मिल गया तो भारत में ब्रिटिश व्यापारिक समूह बड़े पैमाने पर व्यापार में लग गए। इससे भारत में व्यापारिक हितों को सुरक्षित रखने की समस्या उत्पन्न हुई और देश के बड़े व्यापारिक केन्द्रों मद्रास, बम्बई, कलकत्ता आदि में यूरोपीय चैंबर्स का निर्माण हुआ। प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् जब भारतवासियों की रूचि औद्योगिक क्षेत्र में बढ़ी तो अनेक औद्योगिक संगठनों जैसे ग्लास निर्माताओं, साबुन बनाने वालों, कागज मिल मालिकों और रसायन निर्माताओं के संगठनों का निर्माण हुआ। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद भारत में औद्योगिक विकास तेजी से होने के कारण इन समुदायों की संख्या बढ़ती गई।